वेदान्त पञ्चदशी 1-50

श्लो ॥विकल्पो निर्विकल्पस्य सविकल्पस्य वा भवेत् ।

आद्ये व्याहतिरन्यत्रानवस्थात्माश्रयादयः ॥ *(वे.पं.1-50)*

यह विकल्प। निर्विकल्पका कियाहै वा सविकल्कका किया है ? प्रथमपक्षविषै व्याघातदोष होवै। औ द्वितीयपक्षविषै अनवस्थाआत्माश्रयादिक च्यारिदोष होवै।

हे वादिन् ! “महावाक्यकरि लक्ष्य जो ब्रह्म सो निर्विकल्प है वा सविकल्प है?" इस प्रकार तिन निर्विकल्पब्रह्मविषै औ सविकल्पब्रह्मविषै जो तैनैं विकल्प कियाहै। सो विकल्प क्या निर्विकल्पब्रह्मका होवैगा अथवा सविकल्पब्रह्मका होवैगा ?

तिनमैं "निर्विकल्पका विकल्प किया है" ।इस प्रथमपक्षविषै तैंनै जो कथन किया निर्विकल्पका विकल्प है सो व्याघातयुक्तहीं होवैहै। जातैं तिसकूं निर्विकल्प बी कहता है फेर तिसका विकल्प बी करता है। औ

"सविकल्पका विकल्प किया है। इस दूसरेपक्षविषै आत्माश्रयसैं आदिलेके अनवस्था पर्यंत चारिदोष होवै है। सो आत्माश्रयादिक दिखावैहैं:-

१ आत्माश्रयदोषः– “सविकल्पब्रह्मका विकल्प है” इस वाक्यविषै सविकल्पशव्दका क्या अर्थ है ।सो श्रवण कर:–विकल्पकरि सहित जो वर्तता होवै सो कहिये सविकल्पब्रह्मरूप धैर्मी ।सो सविकल्पब्रह्म जिस विकल्पकरि सहित वर्तताहै सो विकल्प इस प्रसंगमैं तृतीयांत विकल्पपदकरि कहिये है औ जो तैनैं तिस सविकल्पब्रह्मविषै विकल्प किया है सो विकल्प इहां प्रथमांतविकल्पपदकरि कहिये है।

हे प्रतिवादी! इहां प्रथमांतविकल्पपदकरि औ तृतीयांत विकल्पपदकरि एकहीं विकल्प तेरेकरि कहिये है वा दोनूं ? जब एकहीं विकल्प प्रथमांत औ तृतीयांतरूप कहे तब आप एक हीं विकल्प। विकल्पका आश्रय जो सविकल्पब्रह्म। तिसका विशेषण होनेकरि आपहीं आप

का आश्रय हुआ। कहिये प्रथमांतरूप जो तेरा विकल्प है तिसका आश्रय जो सविकल्प ब्रह्मका विशेषणरूप तृतीयांतविकल्प है सो बी तेरे विकल्प प्रथमांतका आश्रय है।काहेतैं ? विशिष्टविषै वर्तनेवाले [1]धर्मकूं विशेषणविषै वर्तनेके नियमतैं औ फेर तिस आश्रय हुये तृतीयांतविकल्परूप आपविषै प्रथमांतरूपकरि तेरे विकल्प वर्तनेतैं आपहीं आपके आश्रित जब हुवा तब एकहीं विकल्प। तृतीयांवरूपसैं आश्रय औ प्रथमांतरूपसैं आश्रित हुवा। यहहीं आपकी सिद्धिविषै आपकी अपेक्षा करनेरूप आत्माश्रयदोष है॥

२ अन्योन्याश्रयदोषः– जब प्रथमांतविकल्प औ तृतीयांतविकल्प परस्परभिन्न हैं, तब तृतीयांतविकल्पकूं बी विकल्परूप होनेतैं औ तिसके आश्रय ब्रह्मकूं सविकल्प होनेतैं तिस तृतीयांत विकल्पके आश्रय ब्रह्मका विशेषणरूप कोइक विकल्प मान्या चाहिये। इस वाक्यसैं यह सूचन किया है:-जोजो विकल्प है सोसो विकल्प।सविकल्प कहिये विकल्पसहित आश्रय विषै वर्तता है। निर्विकल्पविषै नहीं॥ जैसैं प्रथमांतरूप तेरा विकल्प सविकल्पआश्रयविषै वर्तताहै। तैसैं सर्वविकल्प। सविकल्पआश्रयविषै वर्तनेवाले भये। यातैं जैसैं प्रथमांतरूप तेरे विकल्पकी स्थितिअर्थ तृतीयांतविकल्पकरि आश्रय जो ब्रह्मरूप धर्मी ताकूं सविकल्प किया है

---

[1] एकही विकल्प तृतीयांतरूप प्रथमांतरूप आपका आश्रय किस प्रकार हुवा ? सो श्रवण करः– विशिष्टविषै वर्तनेवाले धर्मकूं विशेषणविषै वर्तनेके नियमतैं॥ याका यह अर्थ है:-विशेषणसहित वस्तुविषै जो धर्म वर्तताहै सो धर्म विशेषणविषै बी नियमकरि वर्तता है॥ दृष्टांत:–जैसैं “दंडी (दंडवान्) आया है" इस वाक्यविषै दंडविशेषण (आधेय) है,औ पुरुष विशेष्य (आधार) है॥ दंढरूप विशेषणकरि विशिष्ट दंडीपुरुषविषै आगमनक्रियारूप जो धर्म वर्तता है सो धर्म दंडरूप विशेषणविषै बी वर्तताहै। जैसैं दंडीपुरुष आया है तैसैं दंड बी आयाहै॥इति॥

सिद्धांत:-इहां दंडीकी न्यांई सविकल्पब्रह्मात्मा विशेष्य है औ दंडकी न्यांई तृतीयांतविकल्प विशेषण है औ दंडविशिष्टदंडीकी न्यांई तृतीयांतविकल्पविशिष्ट सविकल्प ब्रह्मात्मा है औ विशिष्ट (विशेषणसहित वस्तु)विषै वर्तनेवाले गमनक्रियारूप धर्मकी न्यांई प्रथमांतरूप तेरा (प्रतिवादीका) विकल्प है। जैसैं गमनका आश्रय दंडीपुरुष है तैसैं दंड बी है। इसरीतिसैं जैसैं तेरे विकल्प प्रथमांतरूपका आश्रय सविकल्पब्रह्म है तैसैं सविकल्पब्रह्मका विशेषणरूप तृतीयांतविकल्प बी तेरे विकल्प प्रथमांतका आश्रय है। इतना अर्थ "आप एकही विकल्प। विकल्पके आश्रय ब्रह्मका विशेषण होनेकरि प्रथमांतरूप आपका आश्रय है ॥” इस कथनकरि सूचन कीया है॥

तैसैं तृतीयांतविकल्पकी स्थितिअर्थ कोईक बी विशेषणरूप विकल्पकरि आश्रय। सविकल्प करनेकूं योग्यहीं है। औ जो तृतीयांतविकल्पके आश्रयका विशेषणरूप विकल्प है सो विकल्प विशेषणीभूत विकल्प कहियेहै। सो विशेषणीभूत विकल्प क्या प्रथमांतरूपहीं है अथवा तिन प्रथमांतविकल्प औ तृतीयांतविकल्पतैं भिन्न तीसरा है ? प्रथमपक्षविषै अन्योन्याश्रयदोप है। जो कहै किस प्रकार है? तो इसप्रकार है सो श्रवण करः–परस्परकी सिद्धिविषै परस्परकी अपेक्षा यह अन्योन्याश्रयका लक्षण हैं। सो लक्षण इस पक्षविषै है।काहेतैं ? ईहां प्रथमांतरूप विकल्पकी स्थितिअर्थ तृतीयांतकी अपेक्षा है औ तृतीयांतकी स्थितिअर्थ विशेषणीभूत विकल्पकी अपेक्षा है। सो विशेषणीभूत विकल्प प्रथमांतरूपहीं तैंनै अंगीकार कीयाहै। यातैं तृतीयांतकूं प्रथमांतकीहीं अपेक्षा हुई। इसरीतिसैं अन्योन्याश्रय है॥

३ चक्रिकादोष:– जव विशेषणीभूत विकल्प। तिन प्रथमांत औ तृतीयांततैं भिन्न तीसरा अंगीकार करै है तब इस विशेषणीभूत तीसरेविकल्पकूं बी पूर्वकी न्यांई विकल्परूप होनेतैं औ तिस विशेषणीभूत विकल्पके आश्रय ब्रह्मकूं सविकल्परूप होनेतैं आश्रयका अन्यविशेषणरूप धर्मी-विशेषणीभूत विकल्प अंगीकार किया चाहिये। सो अन्यविशेषणरूप विकल्प क्या प्रथमांतविकल्परूप हैं अथवा तिन प्रथमांत तृतीयांत औ विशेषणीभूत तीसरेविकल्पतैं भिन्न चतुर्थ है ? प्रथमपक्षविषै चक्रिकादोष होवैहै। किस प्रकार होवैहै? यह पूछता है तो इसप्रकार होवै है सो श्रवण कर:– चत्रकी न्यांई भ्रमणकूं चक्रक औ चक्रिका कहैं। तैसैं दिखावै:– ईहां प्रथमांतकी स्थितिअर्थ तृतीयांतकी अपेक्षा है औ तृतीयांतकी स्थितिअर्थ विशेषणीभूत तीसरेविकल्पकी अपेक्षा है औ तिस विशेषणीभूतकी स्थितिअर्थ अन्यविशेषणरूप धर्मीविशेषणीभूत विकल्पकी अपेक्षा है। सो अन्यविशेषणरूप विकल्प प्रथमांतरूपहीं अंगीकार किया है। फेर प्रथमांतकी स्थितिअर्थ तृतीयांतकी अपेक्षा औं तृतीयांतकी स्थितिअर्थ तीसरेकी अपेक्षा है औ तिसकी स्थितिअर्थ प्रथमांतकी अपेक्षा है। इसरीतिसैं चक्रकी न्यांई भ्रमण होनेतैं चक्रिका होवै है॥

४ अनवस्थादोप:– जब धर्मीविशेषणीभूत विकल्प तिन प्रथमांत तृतीयांत औ विशेषणीभूत विकल्पतैं भिन्न चतुर्थहीं है तब तिस अन्यविशेषणरूप चतुर्थविकल्पकूं पूर्वकी न्यांई विकल्परूप होनेतैं तिसके आश्रय ब्रह्मकूं बी सविकल्प (विकल्पसहित)करनेवास्ते

कोइक विशेषणरूप विकल्प और पंचमहीं अंगीकार किया चाहिये तब तिस पंचमविकल्प बी विकल्परूप होनेतैं तिसके आश्रय ब्रह्मकूं सविकल्प करने वास्ते कोईक विशेषणरूप विकल्प और षष्ठ अंगीकार किया चाहिये। ऐसैं आगे बी तिसकी स्थितिअर्थ और सप्तम फेर तिसकी स्थितिअर्थ और अष्टम अंगीकार किया चाहिये। इसरीतिसैं अनवस्था होवैहै॥ प्रमाणरहित धाराका नाम अनवस्था है।

तैसैं अन्यशास्त्रमैं वी कहा है:–"विचक्षणपुरुष हैं वे इस अनवस्थाकूं मूलकी क्षय करनेवाली कहते भये"। इसप्रकार लक्ष्यकी न्यांई विकल्पपक्षविषै बी दोष है सो [2]पृथिवी के संयोगी घटके दृष्टांतसैं जानिलेना।इति॥५०॥

केवल इहां विकल्पपक्षविपैहीं यह व्याघातसैं आदिलेके अनवस्थापर्यंत दोष हैं ऐसैं नहीं किंतु सारेगुणादि अनात्मवस्तुविषै यह दोष प्रवृत्त होवैहै यह कहैहैं:–

श्लो॥इदं गुण क्रिया जाति द्रव्य संबंध वस्तुषु।

समं तेन स्वरूपस्य सर्वमेतदितीष्यताम्॥ *(वे.पं.1-51)*

यह दूषण । गुण क्रिया जाति द्रव्य संबंधरूप वस्तुनविषै समान है। यह विकल्पपक्षमैं कह्या जो व्याघात आत्माश्रयसैं आदिलेके अनवस्थापर्यंतरूप दूषणका समूह सो गुण क्रिया जाति द्रव्य संबंध इन पांचवस्तुनविषै तुल्य है। सो दिखावैहैं:–गुण क्या निर्गुणविषै वर्तता है अथवा गुणवान्विषै ? क्रिया बी क्या क्रियारहितविषै वर्तती है वा क्रियावान् विषै? प्रथमपक्षमैं व्याघात है और दूसरेपक्षविषै आत्माश्रयादि चारिदोष हो।वे पूर्वकी न्याई विचारनें। इसरीतिसैं जातिआदिकसर्वठिकाने बी बुद्धिमानों जानि लेना॥

---

[2] शुक्लघट। क्या घटसंयोग (संबंधविशेष) रहित पृथिवीविषै संयोगसंबंधसैं वर्तताहै वा घटसंयोगसहित पृथिवीविषै ? प्रथमपक्षमैं “मेरे मुखमैं जिन्हा नहीं है" औ "मेरा पिता बालब्रह्मचारी है।” इन वाक्यनकी न्याई अपनेही वचनतैं अपने वचनका बाधरूप व्याघातदोष होवै है। जातैं तिस पृथिवीकू घटसंयोगरहित बी कहता है फिर तिसमैं घटसंयोगबी कहता है यातैं व्याघात है। औ "घटसंयोगसहित पृथिवीविषै शुक्लघट संयोगकरि वर्तता है।" इस दूसरेपक्षविषै आत्माश्रयादिक चारिदोष होवै हैं। वे च्यारिदोष शुक्लघटकी न्यांई नीलपीतरक्तआदिघटनकी कल्पनाकरिके बुद्धिमाननैं जानिलेने॥

विचारसागरोक्त भेदबाधक युक्ति (टिप्पण 392)

"आत्माविषै ब्रह्मका भेद वर्त्तता है" ऐसे कहनेवाले प्रतिवादीकू पूछा चाहिये :–१ सो भेद क्या भेदरहित आत्माविषै वर्त्तता है? २ किंवा भेदसहित आत्माविषै ?

प्रथमपक्षको कहैं तौ व्याघातदोष होवैगा। काहेतैं? तिस भेदके आश्रय आत्माकू भेदरहित बी कहता है। फेर तिसविषै भेद वर्त्तता है ऐसैं बी कहता है। यातैं"मेरा पिता बालब्रह्मचारी है" इस वाक्य की न्याई यह तेरा वचन व्याघात दोषयुक्त होवैगा।

श्लो।।मम मुखे जिह्वा नास्ति(यावज्जीवमहं मौनी), माता मे वन्ध्या आसीत्। पिता मे बाल ब्रह्मचारी, अपुत्रश्च पितामहः॥

इस व्याघातदोषसैं बचनेके लिए "जो भेदसहित आत्माविषै ब्रह्मका भेद वर्त्तता है" यह द्वितीयपक्ष कहैं, तो आत्माश्रयसैं आदिलेके अनवस्थापर्यन्त चारिदोष होवैं हैं। सो आत्माश्रयादि दिखावैं हैं :–

१.आत्माश्रयदोष :–"भेदसहित आत्माविषै ब्रह्मका भेद है" इस वाक्यविषै भेदसहित शब्द का क्या अर्थ है, सो श्रवण कर :– 'भेदेन सह वर्तते' भेदकरि सहित जो वर्त्तता होवै सो, कहिये भेद सहित(भेदविशिष्ट)आत्मारूप धर्मी। सो भेदविशिष्ट आत्मा जिस भेदकरि सहित वर्त्तता है, सो भेद इस प्रसंगमैं तृतीयांतभेदपदकरि कहिये है। औ जो तैनैं तिस भेदविशिष्ट आत्मा विषै भेद किया है, सो भेद इहां प्रथमांतभेदपदकरि कहिये है।

हे प्रतिवादी! इहां प्रथमांतभेदपदकरि औ तृतीयांतभेदपदकरि एकही भेद-तेरेकरि कहिये है वा दोनूं भिन्न हैं ? जो एकही भेद प्रथमांत औ तृतीयांतरूप कहैं, तब आप एकही भेद, भेदका आश्रय जो भेदविशिष्ट आत्मा(धर्मी), तिसका विशेषण होनेकरि आपही आपका आश्रय हुआ। कहिये प्रथमांतरूप जो तेरा भेद है, तिसका आश्रय जो भेदसहित आत्माका विशेषणरूप तृतीयांतभेद है, सोबी तेरे प्रथमांतभेदका आश्रय है। काहेतैं? विशिष्टविषै वर्तनेवाले धर्मकूं विशेषणविषै वर्तनेके नियमतैं।

याका यह अर्थ है:– विशेषणसहित वस्तुविषै जो धर्म वर्त्तता है, सो धर्म विशषणविषै बी नियमकरि वर्त्तता है। दृष्टान्त– जैसैं "दण्डी (दण्डवान्)आया है" इस वाक्यविषै दण्ड विशेषण (आधेय)है औ पुरुष विशेष्य (आधार)है। दण्डरूप विशेषणकरि विशिष्ट दण्डीपुरुषविषै आगमनक्रियारूप जो धर्म वर्त्तता है, सो धर्म दण्डरूप विशेषणविषै बी वर्त्तता है। जैसैं दण्डीपुरुष आया है, तैसैं दण्ड बी आया है ॥इति॥

सिद्धान्त:–इहां दण्डीकी न्याई भेदसहित आत्मा विशेष्य है औ दण्डकी न्याई तृतीयांत भेद विशेषण है। औ दण्डविशिष्टदण्डीकी न्याई तृतीयांतभेदविशिष्ट भेदसहित आत्मा है। औ विशिष्ट (भेदसहित वस्तु)विषै वर्तनेवाले गमनक्रियारूप धर्म की न्याई प्रथमांतरूप तेरा (प्रतिवादीका)भेद है। जैसैं गमनक्रियाका आश्रय दण्डीपुरुष है, तैसैं दण्ड बी है। इसरीतिसैं जैसैं तेरे प्रथमांतरूप भेदका आश्रय भेदसहित आत्मा है, तैसैं भेदसहित आत्माका विशेषण रूप तृतीयांतभेद बी तेरे प्रथमांत भेदका आश्रय है। "आप एकही भेद, भेदके आश्रय आत्माका विशेषण होनेकरि प्रथमांतरूप आपका आश्रय है"इतना अर्थ–इस कथनकरि सूचन किया है।स्पष्टार्थ यह है कि, "एकही भेद तृतीयांतरूपसैं आश्रय औ प्रथमांतरूपसैं आश्रित हुआ। यहही आपकी सिद्धिविषै आपकी अपेक्षा करनेरूप आत्माश्रयदोष है"।

२.अन्योन्याश्रयदोष :–उपरोक्त आत्माश्रयदोषसैं बचनेके लिये "जो प्रथमांतभेद औ तृतीयांतभेद परस्पर भिन्न हैं" ऐसैं कहैं हैं:–तब तृतीयांतभेद बी भेदरूप होनेतैं औ तिसके आश्रय आत्माकूं भेदसहित होनेतैं तिस तृतीयांतभेदके आश्रय आत्माका विशेषणरूप कोइक भेद मान्या चाहिये।इस वाक्यसैं यह सूचन किया है:–जोजो भेद है, सोसो भेद। भेदविशिष्ट कहिये भेदसहित आश्रयविषै वर्त्तता है।भेदरहितविषै नहीं।जैसैं प्रथमांतरूप तेरा भेद,भेद-सहित आश्रयविषै वर्त्तता है,तैसैं सर्वभेद, भेदसहित आश्रयविषै वर्तनेवाले भये। यातैं जैसैं प्रथमांतरूप तेरे भेदकी स्थितिअर्थ तृतीयांतभेदपदकरि आश्रय जो आत्मारूप धर्मी, ताकूं भेदसहित किया है, तैसैं तृतीयांतभेदकी स्थितिअर्थ कोइक बी विशेषणरूप भेदकरि आश्रय। भेदसहित करनेकूं योग्यही है। औ जो तृतीयांतभेदके आश्रयका विशेषणरूप भेद है, सो भेद **विशेषणीभूत भेद** कहिये है। सो विशेषणीभूत भेद क्या प्रथमांतरूप ही है? अथवा तिन प्रथमांतभेद औ तृतीयांतभेदतैं भिन्न तीसरा है?

प्रथमपक्षविषै अन्योन्याश्रयदोष है। जो कहै किस प्रकार है? तौ इस प्रकार है, सो श्रवण कर :–"परस्परकी सिद्धिविषै परस्परकी अपेक्षा" यह अन्योन्याश्रयका लक्षण है। सो लक्षण इस पक्ष विषै है। काहेतैं? इहां प्रथमांतरूप भेदकी स्थितिअर्थ तृतीयांतकी अपेक्षा है, औ तृतीयांतकी स्थितिअर्थ विशेषणीभूत भेदकी अपेक्षा है।सो विशेषणीभूत भेद प्रथमांतरूप ही तैनैं अंगीकार किया है। यातैं तृतीयांतकूं प्रथमांतकीहीं अपेक्षा हुई। इसरीतिसैं अन्योन्याश्रय है।

३.चक्रिकादोषः– जब विशेषणीभूत भेद , तिन प्रथमांत औ तृतीयांततैं भिन्न तीसरा अंगीकार करैं हैं, तब इस विशेषणीभूत तीसरे भेदकूं बी पूर्वकी न्याई भेदरूप होनेतैं औ तिस विशेषणीभूत भेदके आश्रय आत्माकू विशिष्टरूप(भेदसहित)होनेतैं आश्रयका अन्यविशेषण-रूप**"धर्मी-विशेषणीभूतभेद"** अंगीकार किया चाहिये। सो अन्यविशेषणरूप भेद क्या प्रथमांत भेदरूप है? अथवा तिन प्रथमांत तृतीयांत औ विशेणीभूत तीसरे भेदतैं भिन्न चतुर्थ है?

प्रथमपक्षविषै चक्रिकादोष होवै है। किस प्रकार होवै है? यह पूछता है तौ इस प्रकार होवै है, सो श्रवण कर :– "चक्रकी न्याई भ्रमणकूं चक्रक औ चक्रिका कहै हैं" ।तैसैं दिखावै हैं :–इहां प्रथमांतकी स्थितिअर्थ तृतीयांतकी अपेक्षा है। औ तृतीयांतकी स्थितिअर्थ विशेषणीभूत तीसरे भेदकी अपेक्षा है।औ तिस विशेषणीभूतकी स्थितिअर्थ अन्यविशेषणरूप धर्मीविशेषणीभूत भेदकी अपेक्षा है। सो अन्यविशेषणरूप भेद प्रथमांतरूप ही अंगीकार किया है। फेर प्रथमांतकी स्थितिअर्थ तृतीयकी अपेक्षा औ तृतीयांतकी स्थितिअर्थ विशेषणीभूत तीसरेकी अपेक्षा है, औ तिसकी स्थितिअर्थ प्रथमांतकी अपेक्षा है।इसरीतिसैं चक्रकी न्याई भ्रमण होनेतैं चक्रिका होवै है।

४.अनवस्थादोष :–जब धर्मी-विशेषणीभूत भेद प्रथमांत, तृतीयांत औ विशेषणीभूत भेदतैं भिन्न चतुर्थहीं है। तब तिस अन्यविशेषणरूप चतुर्थभेदकूं पूर्वकी न्याई भेदरूप होनेतैं तिसके आश्रय आत्माकूं बी भेदसहित करनेवास्ते कोइक विशेषणरूप भेद और-पञ्चमहीं अंगीकार किया चाहिये। तब तिस पञ्चमभेदकूं बी भेदरूप होनेतैं तिसके आश्रय आत्माकूं भेदसहित करनेवास्ते कोइक विशेषणरूप भेद और षष्ठ अंगीकार किया चाहिये। ऐसैं आगे

बी तिसकी स्थितिअर्थ और सप्तम, फिर तिसकी स्थितिअर्थ और अष्टम अंगीकार किया चाहिये। इसरीतिसैं अनवस्था होवै है। "प्रमाण रहित धाराका नाम अनवस्था है"।